## **हाइकु** **डॉ भगवतशरण अग्रवाल**

जापानी लघु कविता हाइकु आज हिंदी में भी लिखी जाती है। डॉ भगवतशरण अग्रवाल के हाइकु का आस्वादन करें।

**हाइकु 1:**

HSSLiVE.IN

(1) समानार्थी शब्द हाइकु से चुनकर लिखें।

| | | | |
|---|---|---|---|
| आकाश | - नभ | घोंसला | - नीड़ |
| पर | - पै | चारों और घूमना | - मँड़राना |

(2) पेड़ों से नीड़ कब गिर पड़ता है?
वर्षकाल में आकाश गूँजते समय पेड़ों से नीड़ गिर पड़ता है।
(3) “मँड़राती माँ।” क्यों?
पेड़ों से नीचे गिरे बच्चों को छोड़कर माँ भाग नहीं जाती।
(4) माँ किसके चारों ओर मँड़राती रहती है?
पेड़ से गिरे बच्चों के चारों ओर।
(5) हाइकु का मूलभाव क्या है?
माँ की ममता अतुलनीय एवं अवर्णनीय है।

**हाइकु 2:**

(1) समानार्थी शब्द हाइकु से ढूँढें।

| | | | |
|---|---|---|---|
| भाद्रपद | - भादों | सरसना | - शोभित होना |

(2) भाद्रपद के महीने में किस का आँगन सूखा रहता है?
विरहिणी का
(3) भाद्रपद के महीने में विरहिणी का आँगन क्यों सूखा रहता है?
पति-विरह में रहनेवाली स्त्री की जीवन आहों और पीड़ाओं का होगा।
(4) विरहिणी का जीवन क्यों सूखा कही गई है?
पति के दूर होने से सुख भरे मौसम भी उसका मन हमेशा सूखा-रूखा रहता है।
(5) हाइकु का मूलभाव क्या है?
विरह की पीड़ा असहनीय है।

**हाइकु 3:**

(1) समानार्थी शब्द हाइकु से ढूँढें।

| | | | |
|---|---|---|---|
| अतिथि | - मेहमान | वृद्धावस्था | - बुढ़ापा |

(2) हमारा दुश्मन कौन है?
**या**
न मानने पर भी आनेवाला मेहमान कौन है?
बुढ़ापा
(3) हम लोग क्यों बुढ़ापे क्यों हमारा दुश्मन मानते है?
बुढ़ापे होना हम पसंद नहीं करते। इसलिए हम इसे दुश्मन मानते हैं।
(4) न मानने पर भी बुढ़ापा क्यों आती है?
परिवर्तन प्रकृति नियम है। उसे रोक नहीं सकता।
(5) हाइकु का मूलभाव क्या है?
परिवर्तन प्रकृति नियम है। हर एक को इसे स्वीकारना पड़ेगा।

**हाइकु 4:**

(1) कौन धन्य है?
वर्षा धन्य है।
(2) क्यों वर्षा धन्य है?
वर्षा जीवनदाता है। इसलिए धन्य भी है।
(3) किसके कारण वर्षा धन्य है?
किसान के कारण

HSSLiVE.IN

DO NOT COPY

HSSLiVE.IN

(4) किसान के कारण वर्षा धन्य है, क्यों?
किसान तन-तोड़ मेहनत करके खेतों में कविताएँ बोता है। इससे वर्षा धन्य होती है।

(5) किसान कैसे खेती में कविताएँ बोती है?
वह तन-तोड़ मेहनत करके खेतों में नए जीवन की कविताएँ बोती है। इस से वह दुनिया को अन्न देते है।

(6) हाइकु का मूलभाव क्या है?
वर्षा जीवनदाता है। तन-तोड़ मेहनत करनेवाले किसानों के कारण वह धन्य हो गया है।

**हाइकु 5:**

(1) फूल कहाँ खिलता है?
बाग में।

(2) फूल खिलते समय प्रेमी के मन में किसकी याद आती है?
अपनी प्रेमिका की।

(3) प्रेमी के मन में प्रेमिका की यादें कब आती है?
बाग में फूल खिलते वक्त।

(4) फूल खिलते समय क्यों प्रेमी के मन में प्रेमिका की यादें आती है?
प्रेम की स्मृतियाँ हमेशा प्रेमी- प्रेमिका के मन में हरा रहते है। किसी बाग में फूल खिलते समय उन दोनों के मन में भी उसके जीवन की सुंदर पलों की स्मृतियाँ उभर कर आती है।

(5) हाइकु का मूलभाव क्या है?

प्रेम कभी नहीं मुरझाता है।

**हाइकु 6:**

(1) समानार्थी शब्द हाइकु से ढूँढें।
वेदना - दर्द हिमकण - ओस

(2) आँसू भी ओस के समान है, किसको?
जिन्हें वेदना का अहसास नहीं होता।

(3) हाइकु का मूलभाव क्या है?
वेदना मन को पवित्र बनाती है। दूसरों की वेदना की पहचान ही मानवता है।

DO NOT COPY

HSSLiVE.IN

**<u>हाइकु के भावार्थ लिखें।</u>**

(1) जापानी काव्य शैली हाइकु का खूब प्रचार हिंदी में हैं। हिंदी में हाइकु को खास पहचान दिलाने में भगवतशरण अग्रवाल का विशिष्ट योगदान हैं। 'इंद्रधनुष' आपका प्रसिद्ध हाइकु संग्रह हैं।

आकाश को गुँजाती हुई भीषण आँधी आई। प्रकृति के इस प्रकोप में बड़े-बड़े पेड़ नीचे गिर पडे। उसके साथ वृक्षों की टहनियों से पक्षियों का नीड़ भी नीचे गिर पड़ा। नीडों से गिरे छोटी पक्षियों को छोडकर उनकी माँ भाग नहीं जाती। वह उनके पास मँडराती रहती हैं।

प्रस्तुत हाइकु में माँ के प्यार के बारे में कहा गया हैं। माँ का प्यार अतुल्य हैं। किसी विपत्ती में भी वह अपने बच्चों को नहीं छोडता है।

(2) जापानी काव्य शैली हाइकु का खूब प्रचार हिंदी में हैं। हिंदी में हाइकु को खास पहचान दिलाने में भगवतशरण अग्रवाल का विशिष्ट योगदान हैं। 'इंद्रधनुष' आपका प्रसिद्ध हाइकु संग्रह हैं।

भाद्रपद के महीने में सारे प्रकृति शोभित रहते हैं। सब कहीं आनंद और खुशी फैलती हैं। लेकिन विरहिणी के जीवन का आँगन सदा सूखा रहता हैं। अर्थात आहों और पीड़ाओं से भरा रहता हैं। पति विरह के कारण सुख भरे मौसम भी उसका मन सूखा-रूखा रहता हैं।

विरह की पीड़ा दर्दनाक हैं।

(3) जापानी काव्य शैली हाइकु का खूब प्रचार हिंदी में हैं। हिंदी में हाइकु को खास पहचान दिलाने में भगवतशरण अग्रवाल का विशिष्ट योगदान हैं। 'इंद्रधनुष' आपका प्रसिद्ध हाइकु संग्रह हैं।

हर व्यक्ति बुढ़ापे की अवस्था को अपना दुश्मन मानता हैं। लेकिन हम माने या न माने बुढ़ापा बिना बुलाए मेहमान की तरह हमारे जीवन में आते हैं।

परिवर्तन प्रकृति नियम हैं। हर एक को उसे स्वीकारना पड़ेगा।

(4) जापानी काव्य शैली हाइकु का खूब प्रचार हिंदी में हैं। हिंदी में हाइकु को खास पहचान दिलाने में भगवतशरण अग्रवाल का विशिष्ट योगदान हैं। 'इंद्रधनुष' आपका प्रसिद्ध हाइकु संग्रह हैं।

वर्षा जीवनदाता हैं। कठिन प्रयत्न करते खेतों में नए जीवन की कविताएँ रचनेवाला या बोनेवाला किसान के कारण वर्षा धन्य हो जाती हैं।

(5) जापानी काव्य शैली हाइकु का खूब प्रचार हिंदी में हैं। हिंदी में हाइकु को खास पहचान दिलाने में भगवतशरण अग्रवाल का विशिष्ट योगदान हैं। 'इंद्रधनुष' आपका प्रसिद्ध हाइकु संग्रह हैं।

प्रेम कभी नहीं मुरझाता हैं। संयोग के क्षणें में जो वस्तुएँ प्रेमी-प्रेमिका को सुख एवं खुशी प्रदान करती हैं, वे विरह के अवसर आने पर अपने सुखद क्षणों की मधुर यादें दिलाती हैं। प्रेमी-प्रेमिका के मन में यादें हमेशा हरा रहती हैं।

(6) जापानी काव्य शैली हाइकु का खूब प्रचार हिंदी में हैं। हिंदी में हाइकु को खास पहचान दिलाने में भगवतशरण अग्रवाल का विशिष्ट योगदान हैं। 'इंद्रधनुष' आपका प्रसिद्ध हाइकु संग्रह हैं।

वेदना मन को पवित्र बनाती है। जिसने अपने जीवन में दर्द का अनुभव नहीं किया है वह आँसु का मूल्य नहीं जानता। वेदना के कारण खुशी और प्यार का महत्व बढ़ता है। जो इसे पहचानते नहीं, उसके सामने आँसु भी ओस के समान हैं अर्थात आँसु का कोई मूल्य नहीं है।

HSSLiVE.IN